प्रासंगिक तथा विचारोत्तेजक

'आह्वान' का अक्टूबर-दिसम्बर, 1999 अंक यथासमय प्राप्त हुआ। धन्यवाद। अंक को नये कलेवर में देखकर प्रसन्नता हुई। इस अंक में प्रकाशित सामग्री तथा चुनाव पर पर्चा प्रासंगिक तथा विचारोत्तेजक है। आशा है, इसे भविष्य में और बेहतर ढंग से निकालते रहेंगे।

राम निहाल गुंजन
आरा, बिहार

'आह्वान' भेजने के लिए आभारी हूं। आप पत्रिका में काफी विचारोत्तेजक सामग्री छापते हैं।

• भारत भारद्वाज
जम्मू

पत्रिका अच्छी

पत्रिका वास्तव में अच्छी है। यह जानकार और अधिक प्रसन्नता हुई कि आप यह प्रयास विगत आठ वर्षों से कर रहे हैं। 'छात्रों-नौजवानों के लिए जनरल नॉलेज का आखिरी सबक' बेहद अच्छा लगा। मेरी समस्त शुभकामनाएं आपके साथ हैं।

सुनीत गोस्वामी, पत्रकार
नौबस्ता, लोहामण्डी
आगरा

मासिक किया जाए

मैं 'आह्वान' का नियमित पाठक हूँ और 'आह्वान' को अखबार से पत्रिका के रूप में पाकर मुझे काफी खुशी हुई। सबसे ज्यादा खुशी पत्रिका में संकलनों को देखकर हुई। मेरा सुझाव है कि पत्रिका को त्रैमासिक से द्वैमासिक और मासिक जल्द से जल्द किया जाए। मुझे पत्रिका के सभी लेख बहुत अच्छे लगे। उम्मीद है इस तरह की कृतियां प्राप्त होती रहेंगी।

धीरेन्द्र वर्मा
नैनीताल

हर वक्त आपके साथ

काफी लम्बे अर्से के बाद 'आह्वान' पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मैं इसे उस समय पढ़ा करता था जब इसका रूप एक समाचार पत्र की तरह था। अब तो यह एक पत्रिका का रूप अख्तियार कर चुकी है। यह प्रगति देखकर मुझे काफी प्रसन्नता हुई। पत्रिका के पहले अंक में प्रकाशित सभी सामग्रियां एक से बढ़कर एक थीं। जरूरत है इस पर अमल करने की। आपने सच कहा है कि 'आह्वान क्रान्ति की आत्मा को जागृत करने की जरूरत का अहसास है।' इससे हर एक व्यक्ति को जुड़ना चाहिए। जुड़कर एक नये रास्ते को अख्तियार करना चाहिए।

पत्रिका दिन-दूनी रात-चौगुनी आगे बढ़ती जाये। यही कामना है। आपके विचारों से मैं पूर्णतया सहमत हूं तथा हरवक्त आपके साथ हूँ।

संजय कुमार 'सुमन' (पत्रकार)
चौसा, मधेपुरा बिहार

प्रेरणादायक

पत्रिका के अक्टू०-दिस०'99 के अंक में 'आदि विद्रोही' उपन्यास का परिचय पढ़कर उपन्यास को पढ़ने की तीव्र इच्छा हो उठी। आगे भी इस स्तम्भ में अन्य प्रेरणादायक पुस्तक -परिचय अवश्य दें। 'हमारी विरासत' स्तम्भ के अन्तर्गत 'शहीदे आज़म की जेल नोटबुक' पढ़कर प्रसन्नता के साथ आश्चर्य भी हुआ क्योंकि भारत के क्रांतिकारी दौर का इतना महत्वपूर्ण दस्तावेज आखिरकार आज तक क्यों नहीं छप सका था ? उत्तर प्रदेश में पंचायतीराज' का भंडाफोड़ करता लेख अच्छा लगा। 'विनाशक जीन' से काफी जानकारी प्राप्त हुई। कुल मिलाकर, पत्रिका काफी अच्छी व प्रेरणादायक लगी।

कृपया आगे के अंकों में क्रान्तिकथा व अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज अवश्य ही प्रकाशित करें।

मीनाक्षी पन्त, पाइन्स, नैनीताल

आह्वान कैम्पस टाइम्स
एक प्रति का मूल्य : छह रुपये
वार्षिक : चौबीस रुपये मात्र
(सभी मनीऑर्डर एवं बैंक ड्राफ्ट सम्पादकीय कार्यालय के पते पर भेजें)

नारी जाति का अपमान समाज के लिए कलंक

हमारा समाज एक पिछड़ा हुआ समाज है। जहाँ जाति-धर्म, ऊंच-नीच का भेदभाव है। जहाँ एक तरफ समाज कल्याण की बातें होती हैं, वहीं दूसरी ओर लड़कियों का शोषण किया जाता है। हमारे समाज में नारी को कलंकिनी, आवारा और वेश्या का नाम दिया जाता है। लोगों के जुबान से निकले, इस तरह के घिनौने शब्द नारी जाति को अपवित्रता की दहलीज़ पर ले जाकर खड़ा कर देते हैं। एक समय में पवित्रता की प्रतीक नारी को आज अपवित्र बनाया जा रहा है, क्यों ? खुले बाजार में नारी के जिस्मों का सौदा करने वाले पुरुष जाति के ही लोग हैं। वैसे लड़कियों के साथ बलात्कार की घटनाएं आजकल आम होती जा रही हैं। एक लड़की को निस्सहाय, अकेली पाकर, मनुष्यरूपी दरिन्दे एक गीदड़ की भांति उस पर टूट पड़ते हैं। फिर बाद में कुछ लोग उस लड़की को 'बेचारी' का नाम दे देते हैं और कुछ कलंकिनी कहकर समाज की नजर में दीन-हीन बनाकर छोड़ देते हैं। क्या वह नारी मनुष्य जाति के नाम पर कलंक, ऐसे लोगों को माफ कर पायेगी ? जहाँ सिर्फ लाचारी और बेबसी हो, तो वह समाज में किस तरह जिये ?

आज नारी जाति को अपनी 'बेचारगी' से बाहर निकलकर अपनी मुक्ति की लड़ाई लड़नी होगी। इसके लिए हमें अपने देशवासियों को एक उज्जवल रास्ता दिखाना होगा।

निशा
डी०ए०वी० डिग्री कॉलेज
गोरखपुर

भटकती युवा पीढ़ी को क्रांतिकारी दिशानिर्देशन देने की जरूरत

युवा छात्रशक्ति इस समय अर्द्धजागृत अवस्था में है। इसे पूर्णजागृत करने का टॉनिक 'आह्वान' है। इस समय भटकती युवा पीढ़ी को क्रांतिकारी दिशानिर्देश की आवश्यकता है। विकृत राजनीति के कारण, वर्तमान समय में देश की व्यवस्था पतनशील है। इसका प्रत्येक अंग सड़-गल चुका है। हमें समाज की इस दुर्व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के लिए एक सशक्त माध्यम की आवश्यकता है जो वैचारिक रूप से समृद्ध युवाओं को आपस में जोड़ने का काम करें। 'आह्वान' इस काम को सफलतापूर्वक कर रहा है। 'आह्वान' एक पत्रिका ही नहीं एक सोच, एक विचार है, जो देश की युवापीढ़ी के आक्रोश की चिंगारी को शोला बनाने का कार्य कर रहा है। आज भी देश में सैकड़ों भगतसिंह हैं। परन्तु युवा पीढ़ी को अपने अंदर के भगतसिंह को पहचानकर उसे समाज के प्रति अर्पित करना होगा। 'आह्वान' का यह आह्वान है कि सम्पूर्ण युवाशक्ति को जागृत कर देश की आत्मा में नयी जान फूंकी जाए। जिससे नवीन सहस्त्राब्दि में हमारा देश एक महानशक्ति बन सके।

हमें 'आह्वान' के सभी लेख अच्छे लगे, सिर्फ एक को छोड़कर। 'सिर्फ कोल्डड्रिंक ही बेच पाये' हमें 'आह्वान' के स्तर का नहीं लगा। प्रत्येक अंक में आप विज्ञान और आर्थिक मसलों के सम्बन्ध में भी लेख दें। इसके अतिरिक्त समाज की विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित व्यंग्य लेख भी दें।

जोश ब्रदर्स
डी.एस.बी. कैम्पस, नैनीताल

चीजों को बदलने के लिए
चीजों को समझना होगा !
चीजों को बदलने की प्रक्रिया में
खुद को बदलना होगा !!

ब्रह्मास्त्र के निर्माण की जरूरत

'आह्वान' पत्रिका के सभी साथियों को इस पत्रिका के सम्पादन कार्य के लिए बधाई ! मुझे यह पत्रिका पहलीबार नवम्बर'99 में मिली। इसका हर एक अंश मुझे बहुत अच्छा लगा। जिससे प्रभावित होकर मैं क्रांतिकारी संगठन दिशा छात्र समुदाय में शामिल हुआ और 19 दिस०'99 को बिस्मिल शहादत दिवस पर साइकिल जुलूस में भी सम्मिलित हुआ और वहां मेरा लगाव इस संस्था के प्रति और बढ़ गया। आज मैं इस पत्रिका के बारे में लिखने बैठा। आपलोगों ने इस पत्रिका में उपस्थित हर एक अंश को बहुत ही सच्चाईपूर्ण तथा निर्दोष तरीके से प्रस्तुत किया है और समाज में उपस्थित साम्राज्यवादी और पूंजीवादी जनतंत्र के खिलाफ लेख बहुत ही अच्छा लगा। इस झूठे जनतंत्र को समाप्त करने के लए युवा वर्ग ही सक्षम है क्योंकि अबतक की सभी क्रांतियां बिना युवा वर्ग के संभव नहीं हुईं। अतः मेरा सभी नौजवान साथियों से अनुरोध है कि इस क्रांति में भाग लेकर इसमें उपस्थित विनाशक अस्त्र (साम्राज्यवादी और पूजीवादी जनतंत्र) को समाप्त करें और एक ऐसे ब्रह्मास्त्र का निर्माण करें, जो इस विनाशक अस्त्र को समाप्त कर दे और एक समाजवादी जनतंत्र का सपना साकार हो सके और यह क्रांति बिना युवा वर्ग के संभव नहीं है। क्योंकि युवा रक्त की गर्मी से बर्फ की घाटी भी पिघल जाती है।

मनोज कुमार चतुर्वेदी
बी.एस-सी. (कृषि) चतुर्थ वर्ष
नो.पो.ग्रे. कालेज, बड़हलगंज

संवेदनहीन उपदेशों का क्या अर्थ ?

हमारे कितने अग्रज,गुरुजन, नेता, शीर्ष पदों पर आसीन जनसेवक और स्वयं प्रधानमंत्री तक देशप्रेम-राष्ट्रप्रेम की बड़ी-बड़ी बातें करते और उपदेश देते नहीं थकते हैं। लेकिन खुद उनके भीतर देशभक्ति कहां तिरोहित हो जाती है ? उपदेश पिलाना तो आसान है लेकिन खुद जिन्दगी में उसे उतारना एक बेहद कठिन काम है। यदि दोनों में सामंजस्य नहीं है तो क्या यह बेईमानी नहीं है ? मैं यहां ऐसी ही एक घटना का जिक्र करना चाहूँगी।

जिस वक्त देश का एक हिस्सा, उड़ीसा राज्य, समुद्री तूफान की विनाशलीला झेल रहा था, उस वक्त विशाखापट्टनम में एन सी सी का 'राष्ट्रीय नौसैनिक कैम्प' (2-13 नवम्बर) लगा हुआ था। मैं भी उस कैम्प में शामिल थी। मेरे साथ, उड़ीसा राज्य के कैडेट भी भाग ले रहे थे। चक्रवात की खबर से दुखी तो हम सभी थे, लेकिन उड़ीसा से आये साथियों में बेचैनी और घबराहट ज्यादा ही थी, और यह स्वाभाविक था। उनको यह भी नहीं पता था कि उनके अपने सगे-सम्बन्धी जीवित भी हैं अथवा नहीं, अथवा किन हालात में हैं ? लौटकर वे जाएंगे कहां ?

उड़ीसा के इन कैडेट साथियों ने अपने घर वापस जाने की अनुमति चाही। कई तो बुरी तरह रो रहे थे, बिलख रहे थे। लेकिन, कैम्प अधिकारियों ने देशभक्ति और राष्ट्र प्रेम के पाठ पढ़ाने शुरू कर दिये। उन्हें बड़े-बड़े उपदेश दिये जाने लगे। यही नहीं, देशभक्ति का उपदेश उड़ीसा से आये वे अधिकारी भी दे रहे थें, जो अपने परिवारों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाकर ही कैम्प में आये थे। भला इन संवेदनहीन उपदेशों का क्या अर्थ ? इस घटना ने हम सभी को भीतर से झकझोर कर रख दिया। उड़ीसा के साथी अश्रुपूरित नेत्रों से कलेजे पर पत्थर रखकर कैम्प खत्म होने की प्रतीक्षा में दिन ही काट सकते थे।

आशा बिष्ट
डी.एस.बी. परिसर
कुमायूं विश्वविद्यालय, नैनीताल

क्रान्ति का बिगुल बजाने में सक्षम

''वक्त की धूप हमें
न शिकस्त दे पायेगी
हम वो जर्रा हैं
जो सूरज को निगल जायेंगे।''

ऐसे बुलन्द एवं ओजपूर्ण हौसले को लेकर जो आह्वान अपने किया है, निस्सन्देह व क्रान्ति का बिगुल बजायेगा और 'आह्वान' जन-जन की पुकार बनकर आपका प्रयास सार्थक करेगा।

नौजवान साथियों के साथ-साथ तमाम पाठक इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकेंगे। क्रान्तिकारी विचारों की आज देश, समाज व राष्ट्र को आवश्यकता है। आपकी पहल प्रशंसनीय है। मेरी शुभकामनाएं व बधाई स्वीकारें।

'अपनी ओर से' व दिशा छात्र समुदाय की ओर से जारी 'एक अपील' ने प्रभावित किया।

हे पथिक
संकुचित अभिलाषाओं को
दफ़न कर
नवचेतना उत्पन्न कर
सृजित कर साहित्य ऐसा
ब्रह्म शब्द ऐसा उदित हो
जन-जन में क्रान्ति झंकृत हो
ऐसे में आओ हम सब
नव प्रभात के नव दिवाकर
का मंगलमय गुणगान करें
उदित हो जीवन में नवप्रकाश
मंगलगान करे धरती-आकाश !

कु० अंजना बख्शी ''शबनम''
दमोह

घुसपैठिए

मुबारक... मुबारक... मुबारक...
कोटिशः मुबारक
तुमने
सीमा में आये
घुसपैठिये भगाये,
मेरे देश के
आन-बान-शान- पर कुर्बान
फौजियों !
तुम्हारी बहादुरी को दाद
पर
एक बात बताओगे -
तुम्हारी बीबी
के रसोई-घर में,
चाय में, काफी में,
नाश्ते की प्लेट में,
जूती में, बिस्तर पर,
कूलर में, फ्रिज में,
टी.वी. में, रेडियो में,
तुम्हारी बीबी के
नाखून पर, होंठ पर
जूड़े में, स्नान-घर में
साबुन में, तेल में
ब्रश और पेस्ट में
कहाँ नहीं हैं - घुसपैठिये ?
फौजी !
इन्हें कैसे भगाओगे ?

अजय कुमार पाण्डेय
नवानगर, बलिया

एक अपील

'आह्वान कैम्पस टाइम्स' समूचे देश में चल रहे वैकल्पिक जनमीडिया के प्रयासों की एक कड़ी है। हम सत्ता प्रतिष्ठानों, दाता एजेंसियों, पूँजीवादी घरानों एवं चुनावी राजनीतिक दलों से किसी भी रूप में आर्थिक सहयोग लेना घोर अनर्थकारी मानते हैं। हमारा वैकल्पिक मीडिया सिर्फ और जन संसाधनों के बूते पर खड़ा किया जाना चाहिए — हमारी यह दृढ़ मान्यता है।

अतः हम अपने सभी शुभचिंतकों-सहयोगियों से अपील करते हैं कि वे अपनी ओर से अधिकतम सम्भव आर्थिक सहयोग भेजकर परिवर्तन के इस हथियार को मजबूती प्रदान करें।